This question paper contains 4 printed pages]

Roll No. | | | | | | | | | | | |

S. No. of Question Paper : **6092**

Unique Paper Code : **205503** G

Name of the Paper : **Hindi Nibandh Aur Anya Gadya Vidhayein**

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi**

Semester : **V**

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।)

खंड 'क'

1. सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए : 7+8=15

(क) जीभ को न दबाना अनेक बुराई और क्लेश का कारण है । महाभारत ऐसा सर्वनाशी संग्राम इसी जीभ के न दबाने की बदौलत किया गया । द्रौपदी ने यदि दुर्योधन को 'अंधे के अंधे होते हैं' इस मर्मवेधी वाक्य को कह मर्म-ताडन न किया होता और दुर्योधन को पांडवों से खार न पैदा हुई होती तो परिणाम में 18 अक्षौहिणी सेना काहे को कट मरती, जिसका धक्का जो हिन्दुस्तान को लगा बल्कि जैसा कारी घाव इसके शरीर में हो गया, उसकी मरहमपट्टी आज तक न हो सकी । इन्हीं सब कारणों से सिद्ध हुआ, मनुष्य अपनी जीभ पर जहाँ तक चौकसी कर सके और उसको दबा सके, दबावै। इस पर चौकसी रखने से अनेक भलाईयाँ हैं और स्वच्छंद कर देने से सब तरह की बुराइयों की संभावना है ।

अथवा

जो समझता है कि वह दूसरों का अपकार कर रहा है, वह अबोध है, जो समझता है कि दूसरा उसका अपकार कर रहा है, वह भी बुद्धि-हीन है । कौन किसका उपकार

P.T.O.

करता है, कौन किसका अपकार कर रहा है ? मनुष्य जी रहा है, केवल जी रहा है, अपनी इच्छा से नहीं, इतिहास-विधाता की योजना के अनुसार । किसी को उससे सुख मिल जाए, बहुत अच्छी बात है, नहीं मिल सका, कोई बात नहीं, परन्तु उसे अभिमान नहीं होना चाहिए । सुख पहुँचाने का अभिमान यदि गलत है, तो दुःख पहुँचाने का अभिमान तो नितरां गलत है ।

दुःख और सुख तो मन के विकल्प हैं । सुखी वह है जिसका मन वश में है, दुखी वह है जिसका मन परवश है ।

(ख) मैं मानता हूँ पुस्तकें भी कुछ-कुछ घुमक्कड़ी का रस प्रदान करती हैं, लेकिन जिस तरह फोटो देखकर आप हिमालय के देवदार के गहन वनों और श्वेत हिम-मुकुटित शिखरों के सौंदर्य, उनके रूप, उनकी गंध का अनुभव नहीं कर सकते, उसी तरह यात्रा-कथाओं से आपको उस बूँद से भेंट नहीं हो सकती, जो कि एक घुमक्कड़ को प्राप्त होती है। अधिक से अधिक यात्रा-पाठकों के लिए यही कहा जा सकता है कि दूसरे बातों की अपेक्षा उन्हें थोड़ा आलोक मिल जाता है और साथ ही ऐसी प्रेरणा भी मिल सकती है, जो स्थाई नहीं तो कुछ दिनों के लिए तो उन्हें घुमक्कड़ बना ही सकती है । घुमक्कड़ क्यों दुनिया की सर्वश्रेष्ठ विभूति है ? इसलिए कि उसी ने आज की दुनिया को बनाया है । यदि आदिम पुरुष एक जगह नदी या तालाब के किनारे गर्म मुल्क में पड़े रहते, तो वह दुनिया को आगे नहीं ले जा सकते थे ।

अथवा

पर इस सबसे न तो कुछ होना था, न हुआ । लोग महीना-भर से जानते थे कि मित्र को जाना है । इसलिए मतलब की सभी बातें पहले ही अकेले में ख़त्म हो चुकी थीं और सबके सामने वे सभी बातें की जा चुकी थीं जो सबके सामने कही जाती हैं । सामान रखा ही जा चुका था, टिकट ख़रीदा ही जा चुका था । मालाएँ डाली ही जा चुकी थीं । हाथ या गले या दोनों मिल ही चुके थे और गाड़ी चलने का नाम तक न लेती थी । थिएटर में जब हीरो पर वार करने के लिए विलेन खंजर तानकर तिरछा खड़ा हो जाता है, उस वक्त परदे की डोरी अटक जाए तो सोचिए क्या होगा ? कुछ वैसी ही हालत थी । पर्दा नहीं गिर रहा था ।

2. किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 3×15=45

(क) 'भेड़ियाधसान' निबंध का प्रतिपाद्य लिखिए ।

(ख) 'करुणा' निबंध की तात्विक समीक्षा कीजिए ।

(ग) 'तमाल के झरोखे से' निबंध के केंद्रीय विचार का विश्लेषण कीजिए ।

(घ) 'अदम्य जीवन' के मूल भाव को स्पष्ट कीजिए ।

(ङ) 'भोलाराम का जीव' व्यंग्य रचना में सरकारी तंत्र और कार्यालयों में व्याप्त भ्रष्टाचार पर करारा व्यंग्य किया गया है । स्पष्ट कीजिए ।

खंड 'ख'

3. (क) 'सर्चलाइट' के संपादक के रूप में डॉ. राजेन्द्र प्रसाद की भूमिका पर विचार कीजिए।

अथवा

बिहार में आए भूकंप का अपनी आत्मकथा में डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने जो वर्णन किया है, उसका उल्लेख कीजिए । 10

(ख) 'जूठन दलित-जीवन का प्रामाणिक दस्तावेज़ है ।' इस कथन की समीक्षा कीजिए ।

अथवा

अपनी आत्मकथा में बच्चन ने कवि-सम्मेलनों के बारे में क्या कहा है ?

अथवा

'उग्र' जी स्वयं को ब्राह्मण कुल में पैदा होना नियति की भूल क्यों मानते हैं ? 'अपनी खबर' के आधार पर उत्तर दीजिए । 5